**<u>“श्री” नाथ गुरुदेव का वचन</u>**

सीखने को कुछ नही है

सिखाना कुछ नही है

जानना भी कुछ नही है

सुनना कुछ बांकी नही है

केवल

जो सिखा है, जो जाना है, जो सुना है

उसे कार्य में परिणत करना है।

यह बुद्धि योग

चित्त की चंचलता □र करने का अगोध अस्त्र है।

इंि□यों की धूर्तता से ठगे न जाएँ

सर्वत्र सत्य मान से सत्य □र्शन करते ही

सत्य प्राप्त होता है।

यहीं भगवान प्रत्यश्र हो रहे हैं-

सोचते - सोचते कुम्मक हो जाता है

चिंत स्थिर होने लगता है।

अपनी पवित्रता से

पुण्य के उज्जवल प्रकाश से

उसको कहा नही जाता-

जो शिष्य है, अपने प्राण - प्राण में समझेंगे।

- **“श्री” सोमानन्द**